Chapter 12

bseb class 8th science notes पौधों और जन्तुओं का संरक्षण

पौधों और जन्तुओं का संरक्षण : जैव विविधता

अध्ययन सामग्री-अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति तथा जिज्ञासा की शांति हेतु मानव आदिकाल से ही सजीव जगत का अध्ययन करता आ रहा है। सजीव जगत का सबसे बड़ी विशेषता है-उसकी अद्‌भुत विविधता । प्रकृति में विभिन्न प्रकार के सूक्ष्मजीव, पौधे एवं जन्तु पाए जाते हैं। जो रंग, आकार, संरचना, कार्य एवं व्यवहार में एक-दूसरे से अलग होते हैं। इनके रहने के ढंग एवं बास स्थान में भी भिन्नताएँ पाई जाती हैं। वर्तमान में पौधे एवं जन्तुओं की 17.00,000 से भी अधिक प्रजातियाँ इस पृथ्वी पर मौजूद हैं।

जीवन उत्पत्ति करीब 30 खरब वर्ष पूर्व अत्यंत सूक्ष्म एवं सरल रूप में हुई। उस समय का पर्यावरण भी आज के पर्यावरण से काफी भिन था। इन्हीं सूक्ष्म एवं सरल जीवों से कालांतर में जटिल संरचना वाले जीव विकसित हुए। यही जैव विकासवाद के सिद्धांत का आधार है।
जैव विविधता का तात्पर्य है, धरती पर पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के जीवों की प्रजातियाँ तथा उनका आपसी एवं पर्यावरण से संबंध ।
विश्व के 12 बड़े, जैव विविधता वाले देशों में भारत का छठा स्थान है। विश्व के 10 जैव विविधता स्थलों में से दो भारत में स्थित हैं। ये हैं—पूर्वोत्तर भारत तथा पश्चिमी घाट। ये दोनों क्षेत्र जैव विविधता के बहुत धनी हैं।
पर्यावरण संतुलन के लिए जंगलों का बहुत महत्व है। जंगल के ऊपर के वायुमंडल के ठंडा रहने के फलस्वरूप यहाँ बादलों से वर्षा अधिक होती है। जंगल कट जाएँ तो बारिश कम होगी। जंगलों में पेड़-पौधे अधिक रहने के कारण काफी भोजन उपलव्य रहता है। जिसके कारण काफी जैव-विविधता पायी जाती है। जैव-विविधता के लिए वन तथा वन्य प्राणियों का संरक्षण आवश्यक है। समाज और सरकार ने इन जीवों की सुरक्षा के लिए अनेक विधियाँ एवं नीतियाँ बनाई हैं। वन्य जन्तु अभ्यारण्य, राष्ट्रीय पार्क, जैव मंडल, संरक्षित क्षेत्र के नाम से पौधों एवं जन्तुओं के लिए संरक्षित एवं सुरक्षित क्षेत्र घोषित किया है।

अभयारण्य-जन्तु एवं उनके आवास के लिए हर प्रकार से सुरक्षित क्षेत्र ।
राष्ट्रीय पार्क-वन्य जन्तुओं के लिए आरक्षित क्षेत्र जहाँ वे स्वतंत्र रूप से आवास एवं प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते हैं।
जैव मंडल आरक्षित क्षेत्र— वह विशाल क्षेत्र जहाँ पौधे, जंतु एवं आदिवासियों के पारंपरिक ढंग से जीवन-यापन के लिए सभी संसाधनों को सुरक्षित किया गया है।
जैव विविधता एवं इसके महत्व को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2010 को अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता वर्ष घोषित किया था। साथ ही प्रत्येक वर्ष 22 मई को अंतर्राष्ट्रीय विविधता दिवस मनाया जाता है।
हमारे देश भारत एक समृद्ध जैव-विविधता वाला देश है परन्तु पर्यावरण असंतुलन के कारण बहुत से जीव विलुप्त होते जा रहे हैं और विलुप्त हो गए हैं।
विलुप्त पौधे— अनेक शैवाल, कवक, ब्रायोफाइट्स, फर्न जिन्को जिम्नोस्पर्म, सायकैड आदि ।
विलुप्त जन्तु—मॉरीशस का डोडो पक्षी, डायनासोर आदि ।
विलुप्तप्राय जन्तु—कुछ जन्तु अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत हैं। जैसे—कछुआ, घड़ियाल, सांप, बिच्छु, गिरगिट, मेढ़क, चील, गिद्ध, काले हिरण, हाथी, जंगली कुत्ता सिंह, बाघ, चीता, गैंडा, चीतल, तेंदुआ, डाल्फिन, मोर आदि ।

https://www.evidyarthi.in/

इन सभी संकटापन प्रजातियों का रिकार्ड रखा गया है। जिस पुस्तक को “रेड डाटा पुस्तक” कहते हैं।

तालिका

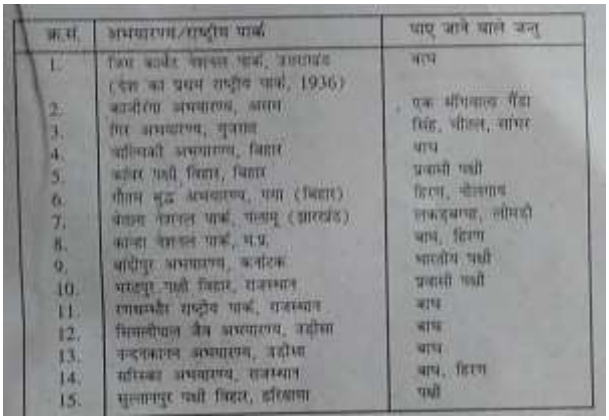

क्र.स.	अभयारण्य/राष्ट्रीय पार्क	पाए जाने वाले जन्तु
1.	जिम कार्बेट नेशनल पार्क, उत्तराखंड (देश का प्रथम राष्ट्रीय पार्क, 1936)	बाघ
2.	काजीरंगा अभयारण्य, असम	एक सींगवाला गैंडा
3.	गिर अभयारण्य, गुजरात	सिंह, चीतल, सांभर
4.	वाल्मिकी अभयारण्य, बिहार	बाघ
5.	कैमूर पक्षी, बिहार, बिहार	प्रवासी पक्षी
6.	गौतम बुद्ध अभयारण्य, गया (बिहार)	हिरण, नीलगाय
7.	बेतला नेशनल पार्क, पलामू (झारखंड)	लकड़बग्घा, लोमड़ी
8.	कान्हा नेशनल पार्क, म.प्र.	बाघ, हिरण
9.	भद्रीपुर अभयारण्य, कर्नाटक	भारतीय पक्षी
10.	भरतपुर पक्षी विहार, राजस्थान	प्रवासी पक्षी
11.	रणथम्भौर राष्ट्रीय पार्क, राजस्थान	बाघ
12.	सिमलीपाल जैव अभयारण्य, उड़ीसा	बाघ
13.	चन्द्रप्रभा अभयारण्य, उड़ीसा	बाघ
14.	सरिस्का अभयारण्य, राजस्थान	बाघ, हिरण
15.	सुल्तानपुर पक्षी विहार, हरियाणा	पक्षी

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/